SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत - एक विश्लेषण

डॉ. वंदना तिवारी

सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोध सार

जिस तरह जब कोई बच्चा पैदा होते ही इस धारा की मूल में रहकर अपनी आवश्यकता के अनुसार धीरे-धीरे तरह-तरह की कलाओं को सीखता हुआ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है इस तरह समय कल और परिस्थितियों अलग-अलग दौर में अलग-अलग राजनीतिक विचारधारा एवं प्रणालियां के विकास में अहम योगदान देती है आज वैज्ञानिक एवं तार्किक समाज के युग में मानववाद एवं व्यक्तित्व वाद के अनुकूल राजनीतिक विचारधारा की भी आवश्यकता है जिसमें लोगों की महता के साथ देश की संप्रभुता के लिए भी आवश्यक होना चाहिए। आधुनिक राजनीति विज्ञान की राजनीति विज्ञान की आंशिक रूपरेखा का निर्माण 15वीं शताब्दी में अपने अस्तित्व में आने लगा था जब राजनीतिक चिंतकों ने विज्ञान एवं तकनीकी क्रांति के दम पर परिवर्तन को रेखांकित कर रहे थे जिसके परिणाम स्वरुप प्रतिनिधि शासन प्रणाली का अवतार व फ्रांस के अगस्त कामटे ने निश्चयवाद को नई दिशा दे रहे थे तो मैक्स वेबर, कैटलिन, चार्ल्स मरियम मोर्गेथाऊ जैसे विद्वानों ने भी इसका पुरजोर समर्थन किया था।

शब्दकुंजी

निश्चयवाद, मानववाद, व्यक्तिवाद, व्यवहारवाद, यथार्थवाद समाजीकरण, गठबंधनात्मक व्यवस्था।

शोध विस्तार

आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत परंपरावादी राजनीति से ही विकसित हुआ है जिसका मूर्त रूप 15 में शताब्दी में दिखाई पड़ता है जब विज्ञान और तकनीक के विकास से तर्क और प्रमाण राजनीतिक विज्ञान के क्षेत्र में अपने विस्तार से क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। जिसके परिणाम स्वरूप प्रतिनिधि शासन प्रणाली का विकास हुआ फ्रांस के अगस्त कामटे ने निश्चयवाद का सिद्धांत देकर आधुनिक राजनीतिक प्रणाली को पौधे के रूप में विकसित किया तो मैक्स वेबर ने इसका समर्थन कर इसको पोषित कर दिया। कालांतर मे आधुनिक राजनीतिक चिंतकों में डेविड

ईस्टन आलमंड दहल और लासवेल जैसे बुद्धिजीवीयो ने उपयुक्त सिद्धांतों को विकसित करने में अपना अहम योगदान दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह सिद्धांत अधिक अस्तित्व में आने लगी आते इसके समर्थक अमेरिकी वीर शास्त्रियों ने भी मन की आधुनिक राजनीतिक विज्ञान के अंतर्गत हमें राज्य तथा सरकार के अध्ययन के साथ-साथ इसके मानवीय व्यवहारों का भी अध्ययन किया जाना चाहिए। जिसके फल स्वरुप व्यवहारवाद आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के अध्ययन का प्रमुख विषय बन गया। आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति विभिन्न विद्वानों में राजनीतिक विज्ञान की प्रकृति को लेकर आपसी मतभेद कुछ विद्वान राजनीति विज्ञान को कल मानते हैं तो वहीं दूसरे इन्हें विज्ञान की संज्ञा देते हैं याध्याय राजनीति विज्ञान के जनक कहे जाने वाले अरस्तु राजनीति विज्ञान को पूर्ण एवं सर्वोच्च विज्ञान के रूप में परिभाषित करते हैं जबकि कुछ विद्वान जैसे मेटलैंड और बक्ल जैसे राजनीति शास्त्रियों का कहना है कि यह विज्ञान तो हो ही नहीं सकता, बेकल ने तो यहां तक कह दिया कि ज्ञान के वर्तमान धरातल पर राजनीति का विज्ञान होना तो दूर वह कलाओं में भी सबसे पिछड़ी हुई कल है प्रस्तुत शोध सारांश के माध्यम से हम आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति क्षेत्र एवं विशेषताओं का विश्लेषण करते हैं राजनीति शास्त्र ने केवल एक शासन संचालन करने वाली संस्थाएं अभी तो यह अन्य सामाजिक विषयों को भी प्रभावित करती है तथा साथ ही राजनीति प्रणाली और मानवीय व्यवहार के विवरण और विश्लेषण से संबंधित भी है।

आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति को हम बिंदुओं से समझ सकते हैं-

1. राजनीति सिद्धांत की प्रकृति मूल्य सापेक्ष है अर्थात यह वैज्ञानिक तथ्यों के अध्ययन पर जोर देता है यथा सुधरता अपने शोध में मूल एवं विचारधाराओं से पृथक रखते हुए सत्यता एवं निरपेक्षता को ध्यान में रखते हुए अपने बौद्धिक परिपक्वता को स्थान देते हैं।
2. आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति अध्ययन मुक्ता पर जोर देता है राजनीति सिद्धांत को प्रभावित करने वाली घटनाएं एवं तथ्य चाहे वह समाजशास्त्र के क्षेत्र से संबंधित हो चाहे अर्थशास्त्र से संबंधित हो या धार्मिक क्षेत्र से संबंधित हो गया था वह यथाशास्त्र थे वह परिवार राष्ट्र विश्व से संबंधित सभी से संबंधित सभी अब सभी इसके अंतर्गत आते हैं क्योंकि इसके पीछे का मूल भावना यह रहती है कि हम वास्तविक घटनाओं का अध्ययन का तत्व पूर्ण अवधारणाओं को प्रकट कर सके।

3. आधुनिक राजनीति सिद्धांत में अनुसंधान संभव है क्योंकि इसके अंतर्गत शोध एवं वैज्ञानिक तथ्यों का घनिष्ठ संबंध है वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग द्वारा अब राजनीतिक वैज्ञानिक साधारण व्याख्याओं एवं सिद्धांत के निर्माण में लगे रहती है अब सिद्धांत निर्माण कठोर शोध प्रक्रियाओं पर आधारित है शोध और सिद्धांत अब एक दूसरे के बिना निरर्थक माने जाते हैं।
4. नवीन राजनीतिक शब्दावली का विकास - आधुनिक राज शास्त्रियों ने पूर्णता नवीन शब्दावली तथा अवधारणा को अपने अध्ययन हेतु प्रयोग करने लगे हैं यथा अब राजनीतिक विज्ञान का अध्ययन राजनीतिक विकास राजनीतिक आधुनिकरण राजनीति संस्कृति तथा राजनीतिक समाजीकरण जैसे नवीन धाराओं के परिपेक्ष में किया जाने लगा है क्योंकि इस अवधारणाओं में सुस्पष्टता एवं निश्चितत के भावार्थ होते हैं।
5. यथार्थवादी व्यवहार - परक अध्ययनों पर बल- आधुनिक राजनीतिkवैज्ञानिक यथार्थवादी और तथ्य परक अध्ययनों पर बल देते हैं प्राइस ने 1924 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक मॉडर्न डेमोक्रेसी में इस प्रकार व्यक्ति किया है की सबसे आवश्यक है तथ्य....तथ्य....तथ्य। अब राजनीति के विद्वानों ने इस बात की खोज प्रारंभ में कर दी है कि संविधान का स्वरूप चाहे जो भी हो समझ में शक्ति को वास्तविक स्रोत और केंद्र कहां स्थित है शासक वर्ग अपनी शक्तियों का प्रयोग किस रूप में कर रहा है और शासित वर्ग का राजनीतिक व्यवहार कैसा है पूर्व अध्ययन कानूनी एवं संस्थागत थे अब उनका स्थान राजनीति प्रक्रियाओं को समझने की प्रकृति ने ले लिया और राजनीतिक दल दबाव और मतदान व्यवहार आदि से संबंधित व्यापक अध्ययन किए जाने लगे। राजनीतिक संस्थान के अध्ययन के पीछे अभिव्यक्तियों के राजनीतिक व्यवहार की विश्लेषण पर अधिक बल दिया जाने लगा।

आधुनिक राजनीति विज्ञान की विशेषताएं

आज के वैज्ञानिक और तार्किक युग के राजनीतिक चिंतकों ने आधुनिक राजनीति की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है।

1. विशेषात्मक एवं आलोचनात्मक मूल्य का महत्व दिया जाना।
2. दार्शनिक एवं तार्किकता को महत्व देना
3. आधुनिक समाज के अनुसार मूल्यों का परिष्करण परिमार्जन करने पर जोर देना॥
4. सिद्धांतों के साथ-साथ व्यावहारिकता का उचित तालमेल।

5. यथार्थ के साथ उचित प्रमाणों का उपयोग।

उपर्युक्त विशेषताओं के अलावा समाज की आधुनिक परिपेक्ष में अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं का मूल्यांकन करने के साथ उनके सर्वेक्षण पर भी जोर देने का प्रयास भी किया जा रहा है जिस राजनीतिक संस्कृति के विकास की अवधारणाओं को विकसित करने में भी मदद मिलती है जिसे हम उदाहरण के तौर पर भारत के 18वीं लोकसभा चुनाव के दौरान गठबंधन आत्मक व्यवस्था में भी देख सकते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत में नए केवल परिवर्तन ही हुआ अभी तो यह एक क्रांतिकारी मोड भी लिया है एक नवीन दृष्टिकोण का उद्भव भी हुआ है जिसके अंतर्गत अब यह तथ्य निश्चित रूप से विकसित रूप ताकि और बढ़ भी रहा है जैसे कि चार्ल्स हाइमन के शब्दों में" राजनीति विज्ञान का क्षेत्र कितना व्यापक हो गया है कि उसमें संस्थागत संगठन निर्णय निर्माण और क्रियाशीलता की प्रक्रिया और नियंत्रण की राजनीति नीतियों और कार्यों एवं विधिवत प्रशासन के मानवीय वातावरण को भी शामिल किया जाने लगा है"। जैसा कि यह बहुधा कहा जाता है कि आदमी राजनीति विज्ञान का फॉर्म और अंत राज्य है ना होकर यह अब राज्य की सीमाओं से पारीक कार्तिक का विषय हो गया है इसके पूर्व के परंपरागत राजनीति विद्वान में इसे वर्णनात्मक ऐतिहासिक आदर्शनात्मक और कानूनी पद्धतियों को भी अपने अध्ययन का विषय क्षेत्र मध्य प्रदेश वर्तमान राजनीतिक विज्ञानों ने विद्वानों के अनुसार आधुनिक राजनीति विज्ञान का विषय क्षेत्र राजनीतिक मनुष्य और उसका व्यवहार, समूह की भूम्मिका एवं उसके आचरण, एवं प्रशासन की भूमिका, अंतरराष्ट्रीय राजनीति तथा आधुनिक राजनीतिक विचारधारा, राजनीतिक मूल्य, अर्थशास्त्र, सैन्य विज्ञान आदि इसके अंतर्गत आते हैं! वर्तमान परिपेक्ष्य में राजनीति विज्ञान को एक ऐसा विस्तृत रूप प्रदान करने की चेष्टा की गई है कि जिससे वह न केवल राज्य से संबंधित है अभी तो समाज के हर वर्ग को अपने अंदर समाहित करने का भी काम कार्य कर रहा है राजनीतिक विज्ञान आज अधिक सुसंगठित और औपचारिक प्रतिमान प्रस्तुत करने के साथ-साथ गैर सरकारी संगठनों के साथ उचित ताल मेल स्थापित करने में अहम भूमिका अदा कर रहा है। आधुनिक राजनीति विज्ञान का क्षेत्र आज इतना विस्तृत हो गया कि सामान्य व्यक्ति से लेकर विशेषण भी अपने अध्ययन एवं शोध में इस विषय की महत्व का चर्चा पर चर्चा करता हुआ दिखाइए जिससे आधुनिक राजनीतिक विज्ञान का वास्तविक केंद्र और शक्ति का उपयोग किस तरफ किया जाए कि उससे

प्रभावित लोगों को प्रार्थना राजनीतिक विज्ञान की नागरिकता को सीमित किया जा सकता है कुछ राजनीतिक चिंतन इन तत्वों के संबंध में अपने-अपने मतदान करते हैं जो प्रशासन की संरचनात्मक पक्ष को और सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर जोर देते हैं जिससे आज की राजनीतिक संस्थाएं जो संवैधानिक मूल्य पर आधारित होती है उनका से शास्त्र से स्थानीय प्रशासन तक ताल में बना रहे हैं वहीं प्रदेश सरकारी और गैर सरकारी दल समूह अपने आप को अंतरराष्ट्रीय स्तर को प्राप्त करने में सक्षम हो सके। अगर देखा जाए तो अरस्तु की राजनीतिक विचारों से लेकर आज तक के विचारक अपने समय कल परिस्थितियों को लेकर हमेशा सचेत होकर सोचते थे जिससे मानवता के साथ एक समाधान आत्मक व्यवस्था बनी रहे और मनुष्य को अपने अधिकार और नैतिक दायित्व का बोध होता रहे जटिल से जटिल समस्याएं भी उसे कल के लिए आसान हो जाए ऐसा प्रयास राजनीति के द्वारा ही संभव हो सका है। अरस्तु ने कहा कि समाज द्वारा सुसंस्कृत मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठतम होता है किंतु जब बिना कानून और न्याय के जीवन व्यतीत करता है तो सबसे अधिक भयंकर हो जाता है। दूसरी तरफ राजनीति में अपने आधुनिक स्वरूप में हो रहे बदलाव के कारण जी अंतरराष्ट्रीय स्वरूप धारण कर रहा है वह उसे आज अधिक उदार एवं मानव चेतना बना दिया है। वही रास्ते विज्ञान ही ऐसे प्रवेश को दर्शाता है कि कैसे असफलताओं और सफलताओं के दौरान आए और उसे दौर में किन लोगों ने अपना योगदान देकर आज के लोगों को जीने की कला सिखा रहे हैं साथ ही राजनीति विज्ञान की आधुनिक विचारधारा ज्ञान परंपरा को भी अपने आगे बढ़ने का भी काम कर रही है जो प्रशासन के क्षेत्र में राज्य और केंद्र के आपसी संबंधों के क्षेत्र में और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के ज्ञान के क्षेत्र में भी लोगों के जागरूक करने का काम करें आज भारत में बैठक अमेरिका यूरोप के से की यूक्रेन सहयोग और ऋषि तिलमिलाहट को अच्छी तरह महसूस कर अंतरराष्ट्रीय भू राजनीति में से परिचित होता है और चेतना में मानवता को आगे करके फिर मानव समाज की सीख देने का भी काम करता है ऐसी परंपरा और आधुनिकता से रचा है से रचा है आधुनिक राजनीति विज्ञान।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर एक्सप्रेस चाहिए की राजनीति विज्ञान को विज्ञान के रूप में विकसित किया जाना सिद्धांत की तराजू में तोड़ना और उसके आयामों को विस्तृत रेखा प्रस्तुत करना ही आधुनिक राजनीति विज्ञान की परिभाषा नहीं है अपितु यह मानव के विकास के कुछ अनुच्छेद पहलुओं से भी जुड़ा है जहां प्रकृति भी मानव का सहयोग करती हुई नजर आती दिखाई पड़ती है लॉर्ड ब्राइस

ने सत्य ही कहा है मानव प्रकृति की प्रवृत्तियों में एकरूपता और समानता पाई जाती है तथा उसके कार्यों को समूह वध समूह बढ़ संयोजित एवं श्रृंखलाबद्ध करके सामान्यतः क्रियाशील प्रवृत्ति के परिणाम के रूप में उनका अध्ययन किया जा सकता है''। अर्थात मनुष्य की मूल प्रवृत्ति एवं आवृत्ति का अध्ययन करके उनको नियंत्रण की सीख भी देता है जो मनुष्य की आवश्यकताओं इच्छाओं तथा विचारधाराओं को परिष्कृत करने का भी काम करता है यही परिष्करण नए कल और नहीं सैद्धांतिक मूल्यों को विकसित करने का भी काम करते हैं यही आधुनिक मूल्यों के विकास का आधार भी होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. पुखराज जैन राजनीति विज्ञान के मूल सिद्धांत
2. वी. एन फडिया डॉ. कुलदीप फडिया, राजनीति सिद्धांत, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल
3. डॉ. लोकेश अग्रवाल, राजनीति विज्ञान, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी
4. दैनिक भास्कर अक्टूबर,
5. विकीपिडीया

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार